कन्या नहीं, पुत्र चाहिए: क्या विकास ही इस समस्या का समाधान है?

07

अध्याय

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल में है दूध और आंखों में पानी

मैथिलीशरण गुप्त

वह चले लिए उत्तंग भाल,
सबकी आंखों में आंख डाल
निर्भीक, आत्मबल जन्मजात,
भयहीन पराक्रम का प्रपात
अदम्य साहस का छोर नहीं
अधुना नारी कमजोर नहीं।।

–सुब्रह्मण्य भारती, ''पुडुमाई पेन''

Me Too

पिछले 10-15 वर्षों में, महिलाओं की क्षमता, दृष्टिकोण और परिणामों के संबंध में 17 में से 14 संकेतकों पर भारत का प्रदर्शन बेहतर हुआ है। इनमें से सात संकेतकों में सुधार कुछ ऐसा रहा है कि भारत की स्थिति विकास के स्तरों को मापने के बाद अनेक देशों के समान दिखाई देती है। उत्साहवर्धक बात यह है कि महिलाओं से जुड़े परिणाम समाभिरूपता का पैटर्न दर्शाते हैं, जो समान स्तर के देशों के मुकाबले भारत में काफी हद तक समृद्धि बढ़ने के साथ-साथ इतने बेहतर होते जाते हैं कि जिन पहलुओं पर ये पिछड़ भी रहे हैं, वहां समय बीतने पर इनके और आगे आने की उम्मीद की जा सकती है। तथापि, दूसरे संकेतक, मुख्यत: रोजगार और अपरिवर्तनीय गर्भनिरोध के प्रयोग और पुत्र की चाह के संबंध में, भारत को अभी कुछ दूरी तय करनी है क्योंकि विकास इस समस्या का समाधान सिद्ध नहीं हुआ है। भारत के भीतर ही, काफी विविधता दिखाई देती है, जहां पूर्वोत्तर राज्यों (देश के शेष भागों के लिए एक आदर्श) ने अन्य राज्यों के मुकाबले लगातार बेहतर प्रदर्शन किया है और यह इसलिए नहीं हुआ कि वे समृद्ध हैं; भीतरी राज्य इस संदर्भ में पिछड़ गए हैं लेकिन हैरानी इस बात की है कि कई दक्षिणी राज्य अपने विकास स्तरों की तुलना में इतना अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं। महिला-पुरुष भेदभाव की चुनौती लंबे समय से, शायद सदियों से चली आ रही है, इसलिए सभी पक्ष समग्र रूप से इसके समाधान के लिए जिम्मेदार है। भारत को-पुत्र के लिए, यहां तक कि अधिक पुत्रों के लिए समाज की इस प्रबल चाह पर विचार करना चाहिए, जो विकास से अप्रभावित दिखाई देती है। महिलाओं और पुरुषों के प्रतिकूल लिंग अनुपात के कारण ''गुमशुदा'' महिलाओं की समस्या की पहचान हो पायी है। लेकिन अधिक पुत्रों की चाह जननक्षमता रोकने के नियमों में भी प्रतिबिंबित हो सकती है जो अंतिम संतान के लिंग पर आधारित हो और जो संभवत: ''अवांछित'' कन्याओं के वर्ग को जन्म देती है-ऐसी कन्याओं की संख्या 21 मिलियन के लगभग आंकी गई है। समाज का यह उद्देश्य होना चाहिए कि ये घृणित श्रेणियां निकट भविष्य में इतिहास की बात हो जाएं। सरकार की ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'', सुकन्या समृद्धि निधि योजना और अनिवार्य मातृत्व छुट्टी नियमावली सही दिशा में एक कदम है।

परिचय

7.1 महिलाओं की भूमिका और स्थिति को उन्नत बनाने के दीर्घकालिक लक्ष्य को मान्यता प्रदान करने के साथ-साथ महिलाओं के विरुद्ध हिंसा की प्रमुख घटनाओं से निपटने के लिए, सरकार ने जनवरी, 2015 में ''*बेटी बचाओ, बेटी*

पढ़ाओ'' अभियान शुरू किया था। मोटे तौर पर ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' का लक्ष्य जागरूकता लाने और सामाजिक मानदंडों को बदलने पर लक्षित जन अभियान के जरिए भारत में संतान लिंग अनुपात (सीएसआर) की खराब स्थिति में सुधार लाने पर केन्द्रित है। चूंकि विकसित देश महिलाओं के स्थानिक उत्पीड़न के प्रभाव से जूझ रहे हैं और चूंकि समाज में महिलाओं की भूमिका और हैसियत को बढ़ाने में आंतरिक और सहायक मूल्य के बारे में साक्ष्य मिल रहे हैं, अब यह प्रश्न करने का समय है: भारत का निष्पादन कैसा है और कितनी प्रगति हुई है? (एल्भर्ग-वायटेक और अन्य; 2013) क्या भारत सुब्रह्मण्य भारती द्वारा वर्णित सशक्त महिला का देश है या फिर मैथिलीशरण गुप्त द्वारा व्यक्त अबला और दमित नारी का देश है?

7.2 लैंगिक समता के आंतरिक मूल्यों पर संदेह नहीं किया जा सकता। लेकिन वर्तमान में ऐसी घटना बढ़ रही है कि यदि महिलाएं और अधिक व्यक्तिगत क्षमता प्राप्त कर सकें, राजनैतिक शक्ति प्राप्त कर सकें और सामाजिक हैसियत प्राप्त कर सकें, और श्रम बल में बराबर की भागीदार बन सकें तो आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण लाभ हो सकता है। (डॉलर और गट्टी, 1999; लगारदे, 2016; लोको और डायफ, 2009)। विकासशील देशों में, कामकाजी महिलाएं अपने बच्चों की शिक्षण व्यवस्था में भी अधिक निवेश करती हैं (एक्विरे और अन्य 2012; मिलर, 2008)। अभी कुछ समय पहले दावोस में विश्व मुद्रा कोष के अध्यक्ष क्रिश्चियन लगार्डे ने कोष के शोध के हवाले से बताया है कि भारत में महिलाओं की भागीदारी पुरूषों के समान हो जाए तो देश की अर्थव्यवस्था में 27 प्रतिशत का सुधार हो सकता है।

7.3 जायजा लेने का दूसरा कारण लिंग और अन्य सामाजिक समस्याओं से संबंधित संभावित व्यापक पद्धति समस्या के दुखदायी मूल्यांकनों को ठीक करना है। समस्या ''विकास काल'' और ''आनुक्रमिक काल'' को मिलाकर एक करने की है। लिंग सूचकांक यथा वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम (डब्ल्यूईएफ) का वैश्विक लिंग अंतर या संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम का लिंग असमानता सूचकांक देशों के कालक्रम में स्थान निर्धारित करता है।

7.4 लेकिन ऐसे साधारण समस्तरीय-स्त्री-पुरूष तुलनाओं में एक गंभीर खामी है। विकास के साथ महिलाओं की भूमिका उदित होती है। 1900 के दशक के प्रारंभ में, स्कैंडिनेविया में महिलाओं की स्थिति आज के स्कैंडिनेविया की तुलना में स्पष्ट रूप से कम बेहतर थी, और आज के उन देशों की तुलना में संभावित रूप से कम बेहतर थी जिन्होंने 1900 के दशक के प्रारंभ में स्कैंडिनेविया की तरह ही विकास का स्तर प्राप्त कर लिया है (बोरकोर्स्ट, 2008)।

7.5 इसलिए, जब तक लिंग के निष्कर्षों के इस महत्वपूर्ण निर्धारक को ध्यान में नहीं रखा जाता तब तक स्त्री-पुरुष संबंधी तुलनाएं-जैसाकि लिंग संबंधी दो सूचकांकों में विचार-विमर्श किया गया है-''विकासकाल'' को ध्यान में न रखकर ''आनुक्रमिक काल'' के आधार पर निर्णय करने के मामलों की तरह भ्रामक होंगी। ''विकास काल'' का सहारा ''आनुक्रमिक काल'' को खारिज करने के लिए नहीं है और न ही यह ''कम उम्मीदों की उदार कट्टरता'' से हार मानने का कोई बहाना है। बल्कि, नीति बनाने में दोनों पहलुओं को शामिल किया जाना चाहिए। कार्रवाई की आवश्यकता आनुक्रमिक काल में आकलनों से उत्पन्न होनी चाहिए लेकिन विकास काल में आकलनों से उद्भूत बोध से उसका समापन होना चाहिए।

7.6 अन्य कारण से भी यह अंतर महत्वूर्ण है: यदि किसी देश का निष्पादन विकास काल में असामान्य है, तो नीतिगत कार्यनीति उस देश की तुलना में कहीं अलग होगी जिसका निष्पादन सामान्य है। पहली स्थिति में, स्पष्ट मामला यह है महिलाओं की भूमिका और स्थिति में सुधार लाने के लिए विकास को ही सहायक के रूप में नहीं माना जा सकता है। सरकार, सभ्य समाज और अन्य हितधारकों का उत्तरदायित्व इससे कहीं अधिक होगा।

7.7 इस अध्याय का पहला भाग लिंग संबंधी निष्कर्षों में बदलाव में विकास द्वारा निभाई गई भूमिका को ध्यान में रखने के पश्चात् स्त्री-पुरूष संबंधी और अंतर-कालिक मूल्यांकनों के संबंध में एक प्रयास है। विशेष रूप से दो प्रकार के मूल्यांकन किए जाते हैं:

- **स्तर:** विकास के स्तर को नियंत्रित करते हुए, 1990 के दशक के अंत/2000 के दशक के प्रारंभ और हालिया अवधि (2015-16) में विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के सापेक्ष लिंग संबंधी निष्कर्षों के समुच्चयों के बारे में भारत ने क्या प्रगति की है?
- **परिवर्तन:** क्या इसमें कोई अभिसरण प्रभाव है? अर्थात्, अन्य देशों की तुलना में भारत में परिवार की संपदा में बढ़ोतरी के प्रति लैंगिक संकेतक ज्यादा प्रतिक्रियाशील हैं?

7.8 लैंगिक समानता अंतर्निहित रूप से बहु-आयामी मुद्दा है। साथ ही एक ही समय में, बहुत से गुणों पर विचार करना समझ को बाधित कर सकता है। तद्नुसार, इस अध्याय में लिंग संबंधी तीन आयामों का मूल्यांकन किया जाता है:

- **क्षमता** का संबंध प्रजनन पर, स्वयं पर, परिवार और अपने स्वयं की सक्रियता पर और स्वास्थ्य पर व्यय करने के निर्णय लेने में महिलाओं की सामर्थ्य से है।
- **मनोवृत्ति** का संबंध: महिलाओं/पत्नियों के विरुद्ध हिंसा, और बेटों की आदर्श संख्या की तुलना में तरजीह दी गई बेटियों की आदर्श संख्या की मनोवृत्ति से है।
- **निष्कर्ष** का संबंध बेटे की चाह (अंतिम संतान के लिंग अनुपात द्वारा मापित), महिला नियोजन, गर्भनिरोधक विकल्प, शिक्षा स्तर, विवाह के समय आयु, पहले बच्चे के जन्म के समय आयु और महिलाओं द्वारा भोगी गई शारीरिक या यौनाचार विषयक हिंसा से है।

7.9 ध्यान केन्द्रित किए जाने वाले आयाम और किए जाने वाले मूल्यांकन न तो व्यापक होते हैं, न ही आवश्यक रूप से प्रतिनिधिस्वरूप, किन्तु उनमें निम्नलिखित का ध्यान रखने का प्रयास किया जाता है: साहित्य ने किस बात पर ध्यान केंद्रित किया है (जयाचन्द्रन, 2015); भारत के संबंध में अन्य महत्वपूर्ण विशिष्ट विशेषताएं, जिनकी अनदेखी कर दी गई है; और आंकड़ों की उपलब्धता पर अधिक व्यावहारिक विचार करना ताकि भारत की तुलना देशों के पर्याप्त रूप से बड़े प्रतिदर्श से की जा सके।

7.10 इस अध्याय में विश्लेषण वर्ष 1980 से 2016 तक के जनसांख्यिकी और स्वास्थ्य सर्वेक्षण (डीएचएस) आंकड़ों के आधार पर किया गया है। इस सर्वेक्षण के आंकड़े पारिवारिक स्तर पर लिए जाते हैं; और महिलाओं तथा पुरूषों से अनेक दूसरे प्रश्नों के साथ लिंग से संबंधित मनोवृत्तियों, क्षमता और निष्कर्षों से संबंधित विस्तृत प्रश्न पूछे जाते हैं। भारतीय राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) 2015-16, जिससे डीएचएस सर्वेक्षण को आंकड़े मिलते हैं, अंतर्राष्ट्रीय डीएचएस आंकड़ा समूह के साथ मिला दिया गया है। भारत के लिए विगत डीएचएस/एनएफएचएस से संबंधित आंकड़े निम्नलिखित अवधि के लिए उपलब्ध हैं: 1992-93, 1998-99 और 2005-06।

7.11 हमारे मुख्य निष्कर्ष निम्नवत् हैं:[1]—

- क्षमता, मनोवृत्ति और निष्कर्षों से संबंधित 17 संकेतकों में से 14 संकेतकों पर, भारत का निष्पादन इस समय के सुधर गया है। उनमें से सात के संबंध में, सुधार इस प्रकार है कि विकास के स्तर को ध्यान में रखते हुए भारत का निष्पादन अन्य देशों के निष्पादन से बेहतर या समान रहा है।
- क्षमता में महिलाओं की सर्वाधिक उल्लेखनीय प्रगति, घर खरीदने और परिवार तथा रिश्तेदारों से भेंट करने के बारे में, निर्णय लेने में हुई है। शारीरिक और यौन उत्पीड़न के अनुभव में गिरावट आई है। महिलाओं के शिक्षा स्तरों में बहुत सुधार हुआ है, परंतु यह सुधार विकास के अनुरूप नहीं है।
- 17 संकेतकों में से 10 के संबंध में, भारत अपने समवर्ती देशों के साथ रह पाने से कुछ दूर है। उदाहरणार्थ, कालानुक्रमिक दौर में महिलाओं के रोजगार में गिरावट आई है, जो विकास काल में काफी अधिक सीमा तक घट गया है। दूसरा ऐसा क्षेत्र स्त्री द्वारा गर्भनिरोधक का प्रयोग करने में है। प्राय: 47 प्रतिशत महिलाएं किसी गर्भनिरोधक का इस्तेमाल नहीं करतीं और जो करती हैं, उनमें एक तिहाई महिलाएं स्त्री नियंत्रित प्रतिवर्ती गर्भनिरोधक का इस्तेमाल करती हैं। ये परिणाम महिलाओं को सशक्त नहीं करने वाले हैं, विशेषकर यदि वे परिणाम प्रजनन क्षमता पर प्रतिबंध की देन थे। क्या महिलाएं अपनी सीमित पसंद का चुनाव करती हैं या इससे सहमत है, ये गम्भीर प्रश्न इस अध्याय के विषय क्षेत्र से परे के हैं।
- यह उत्साहजनक है, कि अभिसरण के साक्ष्य भी हैं। परिवार स्तर पर किए गए विश्लेषण से इंगित होता है कि दो मापदंडों के सिवाय अन्य सभी मापदंडों के अनुसार, जैसे-जैसे धन बढ़ता है, वैसे-वैसे लिंग संकेतकों में सुधार होता जाता है। अधिक महत्वपूर्ण यह है कि विकास के दौर के परिप्रेक्ष्य में, प्राय: सभी लिंग आयामों ने धन के प्रति अनुक्रिया भारत में अन्य देशों की अपेक्षा बहुत हद तक की। इसका आशय यह है कि जहां भी भारत पिछड़ रहा है, वहां जैसे-जैसे भारतीय परिवारों का धन

[1] ''स्तर'' का विश्लेषण (और अंतर्राष्ट्रीय तुलना) देश स्तर, और भारत के भीतर तुलना के लिए राज्यों के स्तर पर रुचि में अंतर का योग करने के पश्चात् किया जाता है। हर समय तुलनाओं को सुकर बनाने के लिए, राज्यों को 1995 की उनकी सीमाओं द्वारा परिभाषित किया जाता है। ''परिवर्तन'' विश्लेषण के लिए, एनएफएचएस 2015-16 से परिवार स्तर के आंकड़ों का उपयोग किया गया है।

बढ़ता जाएगा, वैसे-वैसे भारत अन्य देशों के बराबर होने की आशा कर सकता है।

- जहां भारतीय राज्यों और विभिन्न आयामों के अंदर काफी भिन्नता है, वहां मोटे तौर पर यह पैटर्न पूर्वोत्तर के राज्यों में से उस एक राज्य का है जो विकास के दौर में भी पश्चवर्ती राज्यों से पर्याप्त रूप में बेहतर निष्पादन कर रहा है, पश्चवर्ती राज्य पिछड़ रहे हैं, कुछ विकास के उनके स्तर के बराबर हो गए हैं, और कुछ उससे आगे हो गए हैं। आश्चर्य है कि दक्षिण के कुछ राज्य, जैसे आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, अपने-अपने विकास स्तर को देखते हुए; प्रत्याशा से बदतर निष्पादन कर रहे हैं।
- संभवत: वह क्षेत्र जहां भारतीय समाज को-और यहां सरकारों सभ्य समाज, समुदायों और परिवारों को सर्वाधिक ध्यान देने की जरूरत है वह पुत्र की चाह है, जहां विकास इस समस्या का समाधान सिद्ध नहीं हो रहा है। पुत्र की चाह लिंग चयनित गर्भपात को जन्म देती है और उत्तरजीविता में भिन्नता से जन्म के समय और आगे लिंगानुपात में विषमता पैदा होती है, जिससे 63 मिलियन महिलाओं के गुम हो जाने का अनुमान होता है।
- लेकिन हमारे यहां पुत्र की चाह का दूसरा स्वरूप भी है जिसमें प्रजनन करने वाले माता-पिता द्वारा ''विराम नियमों'' को अपनाया जाना शामिल है, तब तक बच्चों को जन्म देते हैं जब तक इच्छित संख्या में पुत्र पैदा नहीं हो जाते। इस पुत्र की चाह से ''अनचाही'' लड़कियों की अनिच्छित श्रेणी बढ़ती है जो 20 मिलियन से अधिक है। कुछ मायनों में, लड़कियों का एक बार जन्म होने पर पहले तो उनकी स्थिति में सुधार होता है लेकिन समाज अभी भी यही चाहता है कि काश, इनमें से कुछ कम ही पैदा हुई होतीं।
- पुत्र की चाह और पुत्र के बाद पुत्र की चाह के संबंध में भारतीय समाज द्वारा सामूहिक आत्म चिंतन आवश्यक है। सरकार की *बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना* और अनिवार्य मातृत्व अवकाश नियमावली जैसी पहलें इस अंतर्निहित चुनौती का निराकरण करने पर केन्द्रित एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

भारत और अन्य देश

स्तर: क्या भारत मुख्यधारा से बाहर (आउटलायर) का देश है?

7.12 सारणी 1 में मुख्य निष्कर्षों का सार दिया गया है। लिंग संबंधी प्रत्येक आयाम के लिए (डीएचएस और एनएफएचएस4 में दिए गए प्रश्नों के अनुरूप) स्तंभ 1 और 2 दो कालावधियों (2005-06 और 2015-16) के लिए भारत के संबंध में औसत मान तथा स्तंभ 3 भारत में उनके बीच परिवर्तन (प्रतिशतांक) को प्रदर्शित करते हैं। स्तंभ-4 यह मूल्यांकित करता है कि क्या अपने विकास के स्तर को देखते हुए भारत तुलनात्मक रूप से अन्य देशों की दृष्टि से मुख्यधारा से बाहर का देश (2015) है।

7.13 सकारात्मक बात यह है कि प्रभावित करने वाले 17 में से 12 चरों में, भारत में औसत स्तर में समय के साथ सुधार आया है। उदाहरण के लिए, वर्ष 2005-06 में भारत में 62.3 प्रतिशत महिलाएं अपने स्वास्थ्य के बारे में निर्णय लिया करती थीं, जो 2015-16 में बढ़कर 74.5 प्रतिशत हो गया है। इसी प्रकार, शारीरिक या भावनात्मक हिंसा का अनुभव नहीं की हुई महिलाओं की प्रतिशतता 63 प्रतिशत से बढ़कर 71 प्रतिशत हो गई। प्रथम प्रसव पर औसत आयु दस वर्ष में 1.3 वर्ष बढ़ गई।

7.14 इन 12 मामलों में से 7 मामलों पर विकास के स्तरों को हिसाब में लेने के बाद भी भारत का निष्पादन अन्य विकासशील देशों की तुलना में बेहतर या बराबर है।

7.15 चित्र 1 में पहली संतान के जन्म के समय महिला की आयु के ऐसे आयाम को दर्शाया गया है जहां भारत (''आईएनडी'' द्वारा प्रस्तुत) ने प्रगति की है, जिसमें 2005-06 और 2015-16 के बीच 1.3 वर्ष (6.9 प्रतिशत) तक का सुधार हुआ है। इन देशों में विवाहित महिलाओं के लिए पहले बच्चे के जन्म के समय औसत आयु को प्रति व्यक्ति आय के लॉग के प्रति दर्शाया गया है। उनकी संपन्नता की स्थिति को ध्यान में रखते हुए, भारतीय महिलाओं का निष्पादन प्रसव के समय आयु की दृष्टि से 0.4 वर्ष तक बेहतर है।

7.16 भारत को विकास के दौर में अन्य देशों के समान रहने के लिए अनेक आयामों (17 में से 10) को कुछ पूरा करना है। ऐसा एक आयाम प्रतिवर्ती गर्भ-निरोधन उपायों का प्रयोग करना है। भारतीय महिलाओं के धन के स्तर की दृष्टि से, उनका गर्भ-निरोधन के प्रतिवर्ती उपायों का प्रयोग वांछनीय प्रतिशतांक से 51.6 प्रतिशतांक कम है।

7.17 चित्र 2 इस निष्कर्ष की विस्तार से छानबीन करता है। यह अंतरराष्ट्रीय प्रतिदर्श के लिए दर्ज प्रति व्यक्ति जीडीपी और गर्भनिरोधक के तरीके के रूप में वंध्यीकरण का उपयोग न करने वाली महिलाओं के प्रतिशत किसी भी तरह के

सारणी 1: परिणामों का सार

	लिंग आयाम	विशिष्ट मुद्दे# (महिलाओं की प्रतिक्रिया)	(1) भारत के अंक 2005-06 (%)	(2) भारत के अंक 2015-16 (%)	(3) परिवर्तन (2)-(1)	(4) क्या भारत 2016 में धन के स्तर पर मुख्यधारा से बाहर है?
1	क्षमता	उनके स्वास्थ्य के बारे में निर्णय लेने में शामिल किया गया	62.3	74.5	12.2	**8.2**
2	क्षमता	बड़ी घरेलू खरीद के बारे में निर्णय लिए जाने में शामिल किया गया	52.9	73.4	20.4	**9.6**
3	क्षमता	परिवार और संबंधियों से मिलने संबंधी निर्णयों में शामिल किया गया	60.5	74.6	14.1	**4.1**
4	क्षमता	स्वयं की आय के बारे में निर्णय लेने में शामिल किया गया	82.1	82.1	-0.1	**-7.4**
5	क्षमता	गर्भ निरोधक के बारे में निर्णय लिए जाने में शामिल किया गया	93.3	91.6	-1.7	0.1
6	मनोवृत्ति	पुत्रों की तुलना में अधिक अथवा उतनी ही पुत्रियों की इच्छा रखना	74.5	78.7	4.3	**-4.4**
7	मनोवृत्ति	पत्नी के साथ मारपीट बर्दाश्त नहीं करना, यदि किसी गर्भनिरोधन उपाय का प्रयोग किया जा रहा तो प्रतिवर्ती गर्भनिरोधन का प्रयोग करना	50.4	54.0	3.5	**-2.7**
8	निष्कर्ष	बंध्यीकरण (स्टरीलाइजेशन) का उपयोग न करना	33.8	32.8	-1.0	**-51.6**
9	निष्कर्ष	नियोजित##	36.3	24.0	-12.3	**-26.0**
10	निष्कर्ष	शारीरिक श्रम इतर क्षेत्रों में नियोजित##	18.9	28.2	9.3	**-19.8**
11	निष्कर्ष	पति से अधिक अथवा बराबर आय	21.2	42.8	21.6	**-7.4**
12	निष्कर्ष	शिक्षित##	59.4	72.5	13.1	**-6.8**
13	निष्कर्ष	शारीरिक अथवा भावनात्मक उत्पीड़न का अनुभव नहीं करना	62.6	70.5	7.8	0.3
14	निष्कर्ष	यौन उत्पीड़न का अनुभव न करना	90.3	93.6	3.3	**1.7**
15	निष्कर्ष	पहले बच्चे के जन्म के समय औसत आयु*	19.3	20.6	1.3	**0.4**
16	निष्कर्ष	प्रथम विवाह के समय औसत आयु*	17.3	18.6	1.3	**-0.4**
17	निष्कर्ष	आखिरी सन्तान का लिंग अनुपात[2] (प्रति सौ पर लड़कियां)	39.4	39.0	-0.4	**-9.5**

*आयु वर्ष में है और वर्ष 1998-99 के लिए है।#

#सभी प्रश्नों/उत्तरों को सूचित किया गया है ताकि सकारात्मक संख्याएं व्यापक महिला सशक्तिकरण को दर्शा सकें।

इन आयामों को 15-49 वर्ष की आयु के बीच की सभी महिलाओं के समूह के संबंध में आकलित किया जाता है। अन्य सभी आयामों को 15 और 49 वर्ष की आयु के बीच की विवाहित महिलाओं के संबंध आकलित किया जाता है। स्तंभ 4 में दी गई संख्याएं यह दर्शाती है कि भारत किस सीमा, सकारात्मक अथवा नकारात्मक, तक मुख्य धारा से बाहर है। इन्हें अनुलग्नक-1 में परिवार स्तर पर आकलित प्रतीपगमन (रिग्रेशन) समीकरण से प्राप्त किया जाता है। वर्षों की संख्या को प्रदर्शित करने वाली पंक्ति 15 और 16 में दी गई संख्याओं को छोड़कर, सभी संख्याएं औसत आंकलित संबंध से प्रतिशत बिन्दु अन्तराल को प्रदर्शित करती हैं।

**मोटे अंकों की संख्याएं सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

स्रोत: डीएचएस और एनएफएचएस आंकड़ों पर आधारित सर्वेक्षण आकलन

गर्भ निरोध तरीके का इस्तेमाल करने वाली महिलाओं की बीच के संबंध की रूपरेखा तैयार करता है। भारत सर्वोत्तम की पंक्ति में काफी नीचे के पायदान पर है। भारत में ऐसी विवाहित महिलाओं की संख्या जो किसी तरह के गर्भ निरोध

[2] इस संकेतक को तैयार करने के लिए, लिंग के आधार पर जन्म के अलावा, यह जानना भी आवश्यक है कि नवीनतम जन्म लेने वाला बच्चा आखिरी बच्चा है। इस समस्या का समाधान करने के लिए, इस सैम्पल को केवल उन्हीं महिलाओं तक सीमित रखा जाता है जिन्होंने या तो बंध्यकरण करवा लिया है अथवा जैविक प्रजनन चक्र को पूरा कर लिया है (40 वर्ष से अधिक आयु की)

चित्र 1: 2011-16 में पहले बच्चे के जन्म के समय महिला की आयु

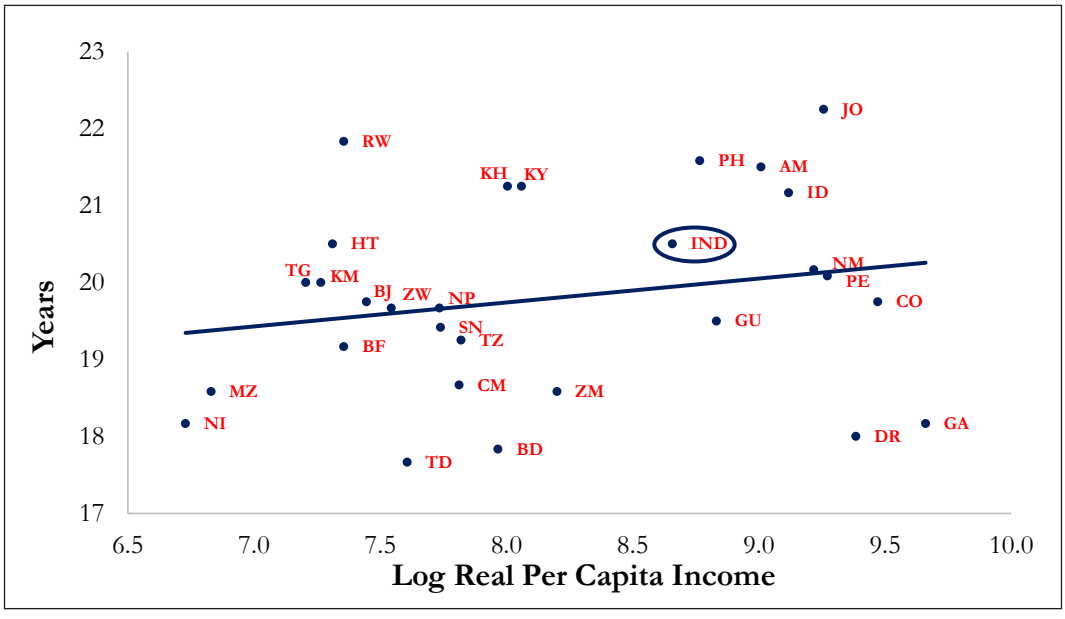

स्रोत: डीएचएस और एनएफएचएस डेटा पर आधारित सीएसओ एवं सर्वेक्षण आकलन।

चित्र 2: गर्भ निरोध के तरीके के रूप में बंध्यीकरण का इस्तेमाल न करने वाली महिलाओं का प्रतिशत (2011-16)

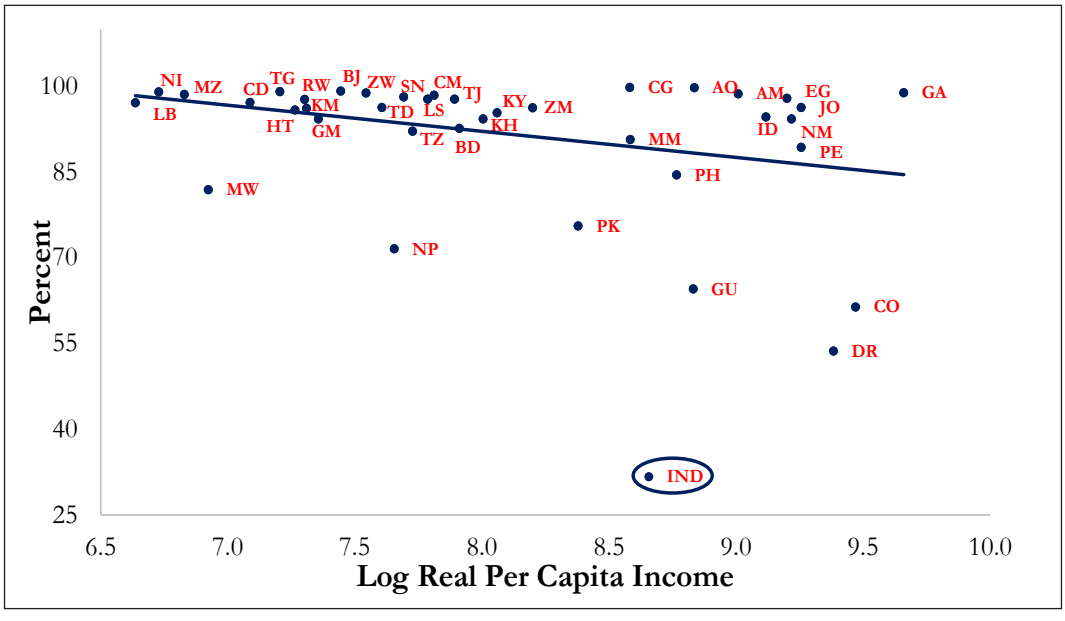

स्रोत: सीएसओ तथा डीएचएस एवं एनएफएचएस डेटा आधारित सर्वेक्षण आकलन

तरीके का इस्तेमाल नहीं करती हैं, काफी अधिक (46.5 प्रतिशत) है। किसी भी तरह के गर्भनिरोध के तरीके का इस्तेमाल करने वाली महिलाओं में महिला संबंधी प्रतिवर्ती गर्भनिरोधक नियंत्रक का इस्तेमाल करने वाली भारतीय महिलाओं का प्रतिशत आमतौर पर कम (32.8 प्रतिशत) है।

7.18 ये निष्कर्ष ध्यान आकर्षित करते हैं: क्योंकि बहुत कम महिलाएं प्रतिवर्ती गर्भनिरोधन का उपयोग करती हैं और जब वे संतान को जन्म देना शुरू करती हैं तब उनका इस बात पर बहुत कम नियंत्रण होता है कि वे कब सन्तान प्राप्त करें, अपितु उन्हें इस पर तभी नियंत्रण प्राप्त होता है

जब उनके बच्चे पैदा होना बंद हो जाते हैं। इसका किसी महिला के जीवन के अन्य आरम्भिक महत्वपूर्ण पड़ावों पर भी समय से पहले असर पड़ सकता है; उदाहरणार्थ, महिलाएं रोजगार के वैसे अवसर प्राप्त नहीं कर सकतीं जैसे पुरुष प्राप्त करते हैं। स्वाभाविक रूप से ये महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जो इससे संबंधित हैं कि कितनी वास्तविक क्षमता महिलाओं को प्राप्त है–क्या वे अपनी सीमित पसंदों का चयन करती हैं या उन पर मौन सहमति देती हैं–परंतु ये गहनतर सवालात इस अध्याय के विषय क्षेत्र से परे के हैं।

7.19 दूसरा उपयुक्त रूप से प्रस्तुत किया गया निष्कर्ष उन महिलाओं के प्रतिशत को दिखाता है जो कामकाजी हैं (सारणी 1 की 9वीं पंक्ति) जिसमें समय के साथ गिरावट आई है (वर्ष 2005-06 में रोजगार में आ रही महिलाओं का प्रतिशत 36 प्रतिशत से कम होकर 2015-16 में 24 प्रतिशत रह गया)। इस पर लंबा और विवादित साहित्य है कि क्या यह गिरावट चिंता का कारण है या समय बीतने और विकास होने के साथ यह अपने-आप सुधर जाएगा। गोल्डिन और अन्य (1995) द्वारा एक अधिक सामान्य प्रक्रिया का उल्लेख किया गया है जिसमें विकास के संदर्भ में महिला श्रम शक्ति की भागीदारी को लेकर U-आकार के व्यवहार की बात कही गई है। भारत इस U के गिरते रुख पर है लेकिन तुलनीय देशों के मुकाबले अधिक बेहतर नहीं है।

7.20 आपूर्ति पक्ष के मोर्चे पर, पुरूषों की आय अधिक होने से महिलाओं को श्रम बल से बाहर निकलने का अवसर मिल जाता है और इस तरह काम करने के कलंक से बच जाती हैं; महिलाओं के उच्चतर शिक्षा के स्तर भी उन्हें खाली वक्त और कार्य-भिन्न गतिविधियों में लगे रहने का अवसर देते हैं और ये सब महिला श्रम शक्ति में उनकी भागीदारी को कम कर देते हैं (भल्ला और कौर, 2011; केपसॉस, 2014; कलेसन, 2015)। मांग पक्ष के मोर्च पर, कृषि के मशीनीकरण के कारण भारतीय कृषि के ढांचागत परिवर्तन के परिणामस्वरूप महिला कृषि श्रमिकों की मांग कम हो जाती है (चटर्जी और अन्य, 2015; मेहरोत्रा और अन्य, 2017)। प्रमाण इस बात का भी संकेत देते हैं कि ऐसी नौकरियां अपर्याप्त हैं जो महिलाएं करना चाहेंगी-नियमित, अंशकालिक नौकरियां जो महिलाओं को सतत् आमदनी मुहैया कराए और काम के साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों को भी निभाने का अवसर दें-और इस तरह के क्षेत्र भी कम हैं जहां महिला कामगार आना चाहेंगी (कन्नण और रवींद्रन, 2012; चांद और श्रीवास्तव, 2014) यह स्थिति और सुरक्षा संबंधी सरोकारों एवं चिंताओं और घरेलू कार्यों एवं बच्चों और बड़ों की देखरेख को लेकर बने सामाजिक मापदंड महिलाओं की आवाजाही और वैतनिक कार्य में उनकी भागीदारी को बाधित करते हैं (पांडे और अन्य, 2016; प्रिलामन, 2017)।

7.21 अंततः, अंतिम संतान का लैंगिक अनुपात महिलाओं के विरुद्ध जाता है और अन्य देशों के मुकाबले यह वर्ष 2015-16 में 9.5 प्रतिशतांक कम था। यह पिछले दशक में गतिरुद्ध भी रहा है। पुत्र की चाह तथा और अधिक पुत्रों की चाह से संबंधित भाग में इस निष्कर्ष के प्रभाव पर विस्तार से चर्चा की गई है।

क्या कोई समाभिसरण प्रभाव है?

7.22 घरों पर किया गया दूसरा मूल्यांकन यह देखने के लिए है कि क्या लिंग विषयक संकेतकों में भारत और अन्य देशों, दोनों में, धन के साथ सुधार देता है।[3] सारणी 2 परिणामों का सारांश देती है (अनुबंध 1 इस विश्लेषण में प्रयुक्त प्रतीपगमन समीकरण का ब्यौरा देता है।)

7.23 प्रतीकात्मक देश का संपदा गुणांक कॉलम 1 में दिया गया है जो प्रतिदर्श में प्रतीकात्मक देश में संगत लिंग संकेतक पर संपत्ति में 1 यूनिट वृद्धि के प्रभाव को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, पंक्ति 1 दर्शाती है कि यदि औसत देश में संपत्ति में 1 यूनिट की वृद्धि होती है तो अपने स्वास्थ्य के संबंध में निर्णय लेने वाली महिलाओं की संख्या में 5.5 प्रतिशत अंकों की वृद्धि होती है। कॉलम 2 दर्शाता है कि भारत में, संपत्ति में 1 यूनिट वृद्धि होने पर स्वास्थ्य संबंधी मामलों में निर्णय लेने वाली महिलाओं की संख्या में पुनः 4.7 प्रतिशत की वृद्धि होगी। कॉलम 3 दर्शाता है कि संपत्ति में 1 यूनिट की वृद्धि होने पर भारत में संपूर्ण प्रभाव में कुल 10.2 प्रतिशत अंकों (4.7+5.5) की वृद्धि होती है। ये युनिट वृद्धियां मानक विचलन के संदर्भ में है।

7.24 सारणी 2 में दर्शाया गया महत्वपूर्ण परिणाम यह है कि 17 में से 15 मामलों में प्रतीकात्मक देश की तुलना

---

[3] डीएचएस/एनएफएचएस 4 द्वारा प्रदान किए गए धन कारक संबंधी स्कोर से परिवार का धन कारक लिया जाता है। यह स्कोर स्वामित्व वाली परिसम्पतियों की संख्या और प्रकार पर आधारित होता है। व्यक्तिगत स्तर पर औसत धन का माप प्रदान करते हुए, परिवार के आकार से भाग देकर परिवार के आकार के संबंध में इस धन कारक को सामान्यीकृत किया जाता है।

तालिका 2: सम्पदा का प्रभाव

	लिंग आयाम	विशिष्ट मुद्दे (महिलाओं की प्रतिक्रिया)	(1) अन्य देशों के लिए धन[$] का प्रभाव (%)	(2) भारत में धन[$] का अतिरिक्त प्रभाव (%)	(3) = (1) +(2) भारत में धन[$] का कुल प्रभाव (%)
1	क्षमता	स्वयं के स्वास्थ्य के बारे में निर्णय लेने में शामिल किया गया	**5.5**	**4.7**	**10.2**
2	क्षमता	बड़ी घरेलू खरीद के बारे में निर्णय के लिए जाने शामिल किया गया	**6.4**	**4.4**	**10.7**
3	क्षमता	परिवार और संबंधियों से मिलने जाने के निर्णयों में शामिल किया गया	**5.5**	**8.2**	**13.6**
4	क्षमता	स्वयं की आय के बारे में निर्णय लेने में शामिल किया गया	**3**	**7.2**	**10.2**
5	क्षमता	गर्भ निरोध के बारे में निर्णय लिए जाने में शामिल किया गया	**0.5**	**6.6**	**7.1**
6	मनोवृत्ति	पुत्रों की तुलना में अधिक अथवा उतनी ही पुत्रियों की इच्छा रखना	**1.9**	**25.3**	**27.2**
7	मनोवृत्ति	पत्नी के साथ मारपीट बर्दाश्त नहीं करना	**11.5**	**12.9**	**24.4**
8	निष्कर्ष	प्रतिवर्ती गर्भनिरोधक का उपयोग, यदि गर्भनिरोधक की कोई पद्धति का उपयोग कर रही है	**-1.5**	**19.2**	**17.7**
9	निष्कर्ष	नियोजित[#]	**3.2**	**-19.9**	**-16.7**
10	निष्कर्ष	शारीरिक श्रम इतर क्षेत्रों में नियोजित[#]	**20.6**	**52.4**	**72.9**
11	निष्कर्ष	पति से अधिक अथवा बराबर की आय	**3**	**7.2**	**10.2**
12	निष्कर्ष	शिक्षित[#]	**10.6**	**59.9**	**70.6**
13	निष्कर्ष	शारीरिक अथवा भावनात्मक उत्पीड़न का अनुभव नहीं करना	**2.1**	**31.3**	**33.5**
14	निष्कर्ष	यौन उत्पीड़न न किया जाना	**1.2**	**8.2**	**9.4**
15	निष्कर्ष	पहले बच्चे के जन्म के समय माध्य आयु[**]	**1.2**	**1.7**	**2.9**
16	निष्कर्ष	प्रथम विवाह के समय माध्य आयु[**]	**1.4**	**2.6**	**4.0**
17	निष्कर्ष	आखिरी सन्तान का लिंग अनुपात (प्रति 100 जन्मों पर बेटी की संख्या)	0.5	**-2.2**	**-1.7**

[**]परिवार सम्पदा में 1 प्रतिशत की वृद्धि के साथ यह संख्या स्कोर में हुए सुधार को दर्शाती है।

[**]वर्ष 1998-99 के लिए औसत आयु

इन आयामों को 15-49 वर्ष की आयु के बीच की सभी महिलाओं के समूह के संबंध में आकलित किया गया है। अन्य सभी आयामों को 15 और 49 वर्ष की आयु के बीच की विवाहित महिलाओं के संबंध आकलित किया जाता है। इन्हें अनुलग्नक-1 में परिवार स्तर पर आकलित समीकरण से प्राप्त किया गया है। वर्षों की संख्या को प्रदर्शित करने वाली पंक्ति 15 और 16 में दी गई संख्याओं को छोड़कर, सभी संख्याएं औसत आकलित संबंध से प्रतिशत बिन्दु अन्तराल को प्रदर्शित करती हैं।

$ मौटे अक्षरों में छपी संख्याएं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण हैं।

स्रोत: डीएचएस और एनएफएचएस आंकड़ों पर आधारित सर्वेक्षण आकलन

में भारत में संपत्ति के प्रति लिंग संकेतक अधिक संवेदी हैं (कॉलम 2 में 17 में से 16 गुणांक धनात्मक हैं)[4]। यह दर्शाता है कि यद्यपि भारत विकास काल में पीछे है, परन्तु यह अपेक्षा की जा सकती है कि परिवारों की संपत्ति में वृद्धि होने से यह अन्य देशों के समकक्ष आ सकता है।[5,6]

7.25 यह द्रष्टव्य है कि केवल दो मामले जहां ऐसा अभिसरण प्रभाव नहीं दिखता और जहां भारत विकास के दौर में भी (जहां भारत में धन का प्रभाव स्तंभ 3 में ऋणात्मक है) पिछड़ता प्रतीत होता है महिला रोजगार और अंतिम संतान के लिंग से संबंधित हैं। अंतिम संतान के लड़की होने

[4] एक कैविएट यह है कि यहां मापी गई संपदा की इकाई सापेक्षिक है न कि निरपेक्ष ताकि वे सभी देशों में संपदा में तुलनात्मक वृद्धि न दर्शाए।

[5] स्पष्ट रूप से कहे तो, यह अभिसरण प्रभाव तभी बरकरार रहेगा यदि नमूने में दिए समृद्ध देशों की तुलना में भारत का सम्पदा गुणांक अधिक हो। यह सत्य साबित होता है और सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है (परिणाम सूचित नहींरु किए गए)।

[6] कुछ मामलों में, भारत का निष्पादन अन्य देशों से अस्वाभाविक रूप से बेहतर प्रतीत हो सकता है (अनुक्रियात्मकता के रूप में), क्योंकि कतिपय चरों का स्तर दूसरे देशों में अधिकतम सीमा के पास हो सकता है, जिससे उनके लिए धन बढ़ने के साथ सुधार की मामूली या शून्य गुंजाइश रह जाती है।

चित्र 3: भारतीय राज्यों में औसत लिंग स्कोर

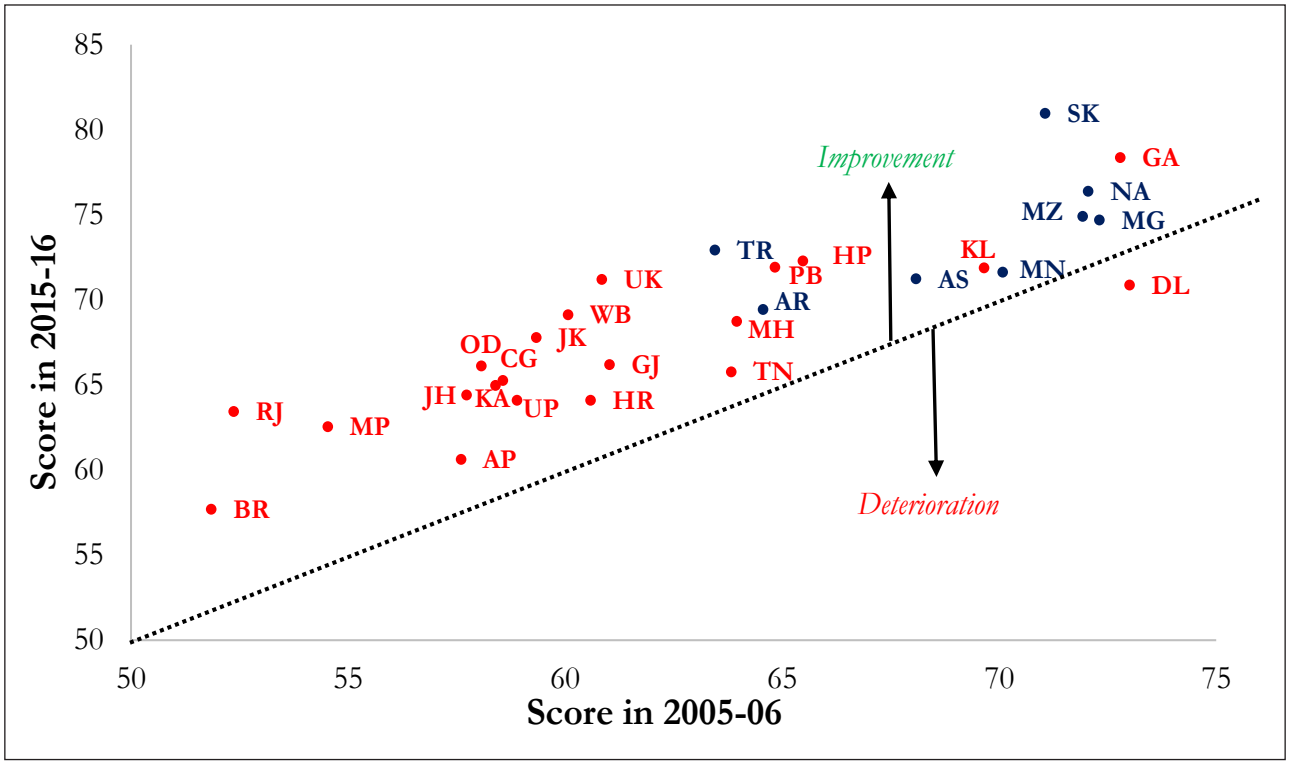

स्रोत: एनएफएचएस 4 डाटा पर आधारित सर्वेक्षण गणनाएं।

की कम संख्या का कारण पुत्र चाहत और पुत्र के बाद पुत्र चाहत विषयक खंडों में अधिक विस्तार से बताया गया है।

भारतीय राज्यों का निष्पादन

7.26 भारतीय राज्यों का एक-दूसरे के संबंध में और विकास के उनके स्तर के संबंध में निष्पादन कैसा है? इस पर कुछ प्रकाश डालें तो यह पता लग जाएगा कि भारतीय राज्यों का निष्पादन सभी आयामों में औसत[7] रहा है। चित्र 3 दो बार की अवधियों में प्रत्येक राज्य के औसत निष्पादन को दर्शाता है। ये परिवर्तशील घटक इस प्रकार मापे गए हैं कि अधिकतम स्कोर 100 प्रतिशत हो। 2005-06 में राज्यों के स्कोर x-अक्ष और 2015-16 में राज्यों के स्कोर y-अक्ष पर हैं और 45-डिग्री की रेखा समयांतराल में गतिशीलता समझने में मददगार है। पूर्वोत्तर राज्यों को नीले रंग से दर्शाया गया है। सभी अन्य राज्यों को लाल रंग से दर्शाया गया है।

7.27 इससे कुछ पैटर्न उभरते हैं। सभी राज्य (दिल्ली को अपवाद मानते हुए) 45-डिग्री की रेखा से ऊपर हैं जिससे पहले के परिणाम रेखांकित होते हैं कि समय गुजरने के साथ-साथ सुधार भी हुआ है। दरअसल, यहां ''अभिसरण'' प्रभाव भी है, क्योंकि पिछली अवधि में कमजोर निष्पादक राज्य समय के साथ-साथ अपने स्कोर में बहुत सुधार कर लेते हैं (अवतलीय छोर के डॉट ऊधर्व कोने पर स्थित बिन्दुओं की तुलना में 45-डिग्री की रेखा के ऊपर बहुत अधिक हद तक चले गए हैं)।

7.28 द्वितीयतः, अधिकांश में पूर्वोत्तरी राज्य (त्रिपुरा और अरुणाचल प्रदेश को अपवाद मानकर) तथा गोवा पूर्वोत्तर के चतुर्थांश में हैं, जिससे इंगित होता है कि वे सभी हर समय बेहतरीन निष्पादक रहे हैं। इनके बाद केरल बेहतरीन निष्पादक राज्य हैं। फिसड्डी निष्पादक राज्य बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखंड और आश्चर्यजनक रूप

7 प्रत्येक राज्य का स्कोर प्राप्त करने के लिए, मानसिकता, एजेंसी और निष्कर्ष के परिवर्तनशील घटकों में से प्रत्येक घटक की राज्यवार प्रतिशत की गणना पहले की जाती है। उम्र-संबंधी परिवर्तनशील घटकों (पहले विवाह के समय उम्र और पहले प्रजनन के समय पर उम्र) के लिए, राज्य-स्तरीय औसत आयु की गणना की जाती है और स्वीडन में विवाह की और प्रथम प्रजनन औसत उम्र के आधार पर सामान्यीकरण किया जाता है (क्रमशः 33 वर्ष एवं 29 वर्ष)। श्रम बल में महिलाओं की प्रतिशतता के लिए वर्तमान न्यूनतम मानदंड महिला आबादी के 72 प्रतिशत पर नियत किया जाता है जो स्वीडन में महिला श्रम बल की हिस्सेदारी का राष्ट्रीय औसत है, और इस प्रकार भारतीय उत्तर सामान्य बना दिए जाते हैं।

चित्र 4. लिंग स्कोर बनाम 2015 में भारतीय राज्यों के लिए प्रति व्यक्ति आय

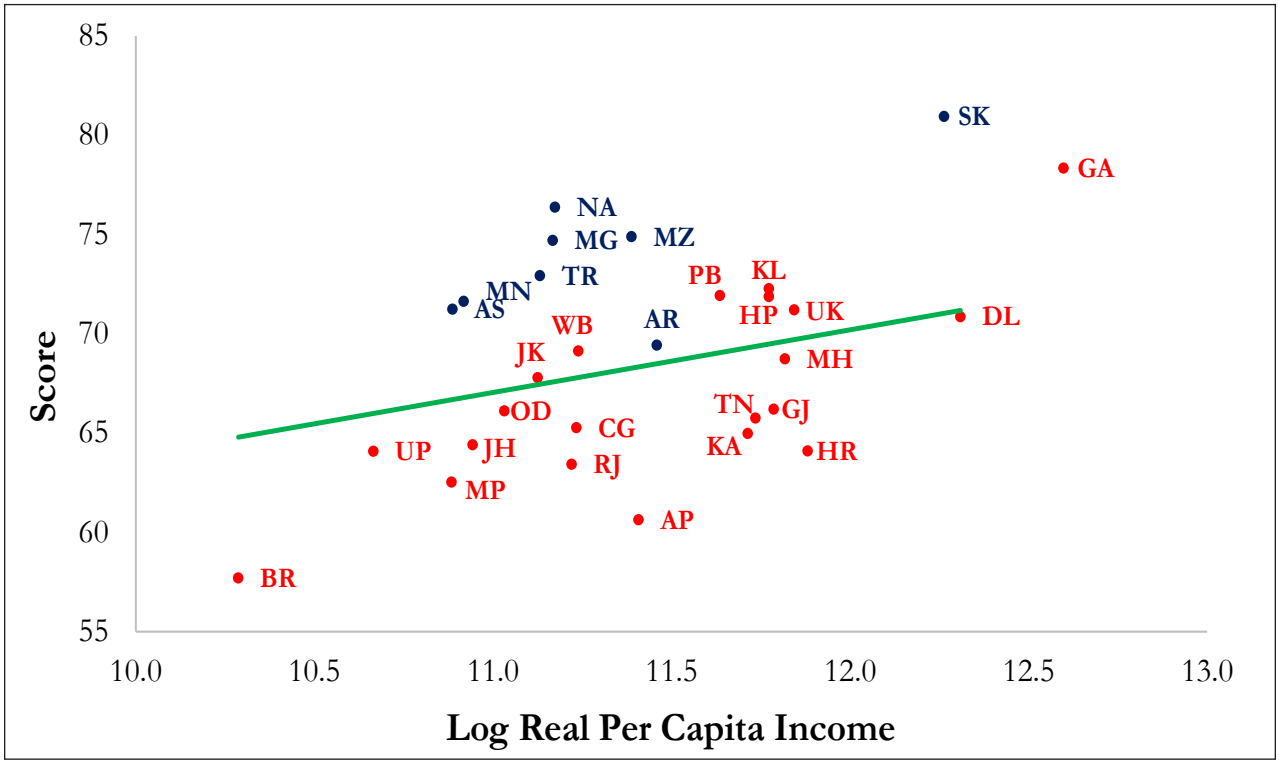

स्रोत: एनएफएचएस 4 आधारित सर्वेक्षण अनुमान और सीएसओ डाटा

से आंध्र प्रदेश हैं। दिल्ली का निष्पादन वास्तविक रूप से एक दशक में बदतर हुआ है, और 2005-06 में उच्चतम अंक पाने वाले के रूप में इसका स्थान नीचे आ गया है (2005-06 में 73 से गिरकर 2015-16 में 70.9 रह गया है)।

7.29 अंतत:, चूंकि सैद्धांतिक रूप से पूर्णांक 100 है, अंत: भारतीय राज्यों की उनकी अधिकतम सीमा से दूरी मापी जा सकती है। बदतर भारतीय प्राप्तांक 57.6 (बिहार) है और उच्चतम प्राप्तांक 81 (सिक्किम) है। अधिकांश भारतीय राज्य 55 और 65 के बीच स्कोर कर रहे हैं (सीमा से करीब 40 प्रतिशत दूर)। भारतीय राज्यों को सैद्धांतिक सीमा तक पहुंचने के लिए कुछ दूरी पार करनी होगी।

7.30 चित्र 4 में प्रति व्यक्ति आय के लॉग के प्रति 2015 में भारतीय राज्यों के लिए लिंग स्कोर दर्शाया गया है, और इस प्रकार, यह सूचित किया गया है कि ''विकास काल'' में राज्य कैसा निष्पादन कर रहे हैं। यहां, पूर्वोत्तर राज्यों के आय स्तरों को ध्यान में रखते हुए, इनका लिंग स्कोर कहीं अधिक अच्छा है। (वे अपनी सर्वोत्तम स्थिति से कहीं ज्यादा बेहतर हैं) दूसरी ओर, अपनी आय के स्तरों के हिसाब से, आंध्र प्रदेश, हरियाणा और बिहार तथा तमिलनाडु ने अच्छा परिणाम नहीं दर्शाया है।

पुत्र ही चाहिए: जन्म पर विषम लिंगानुपात

7.31 पुत्र की चाह से जुड़ा मामला सम्पूर्ण भारतीय समाज के लिए विचार का विषय है। क्योंकि यह एक दीर्घकालिक ऐतिहासिक चुनौती है इसलिए कोई अकेला व्यक्ति इसके अस्तित्व और इसके निराकरण के लिए उत्तरदायी नहीं है। चित्र 5 प्रति व्यक्ति जीडीपी के उनके स्तर के मुकाबले 1970 और 2014 में उनके जन्म आधारित लिंगानुपात (एसआरबी) दर्शाता है। भारत तथा चीन अवरोह रेखा से बहुत ऊपर हैं जिससे यह संकेत प्राप्त होता है कि विकास स्तरों को ध्यान में रखते हुए महिलाओं की तुलना में पुरूषों की संख्या अधिक है।

7.32 जैविक रूप से प्राकृतिक ढंग से जन्म के समय लिगांनुपात प्रति महिला की तुलना में 1.05 पुरुष है।[8] इससे कोई भी महत्वपूर्ण विचलन मानवीय हस्तक्षेप-विशेषरूप से लिंग चयन गर्भपात के कारण होता है। चीन के मामले में, एक संतान नीति के अन्तकरण में पुत्र की चाह के साथ अन्तरक्रिया होने से लिंगानुपात को और बदतर कर दिया,

चित्र 5: जन्म के समय लिंगानुपात और प्रतिव्यक्ति वास्तविक आय (1970 एवं 2014): अंतरराष्ट्रीय तुलना

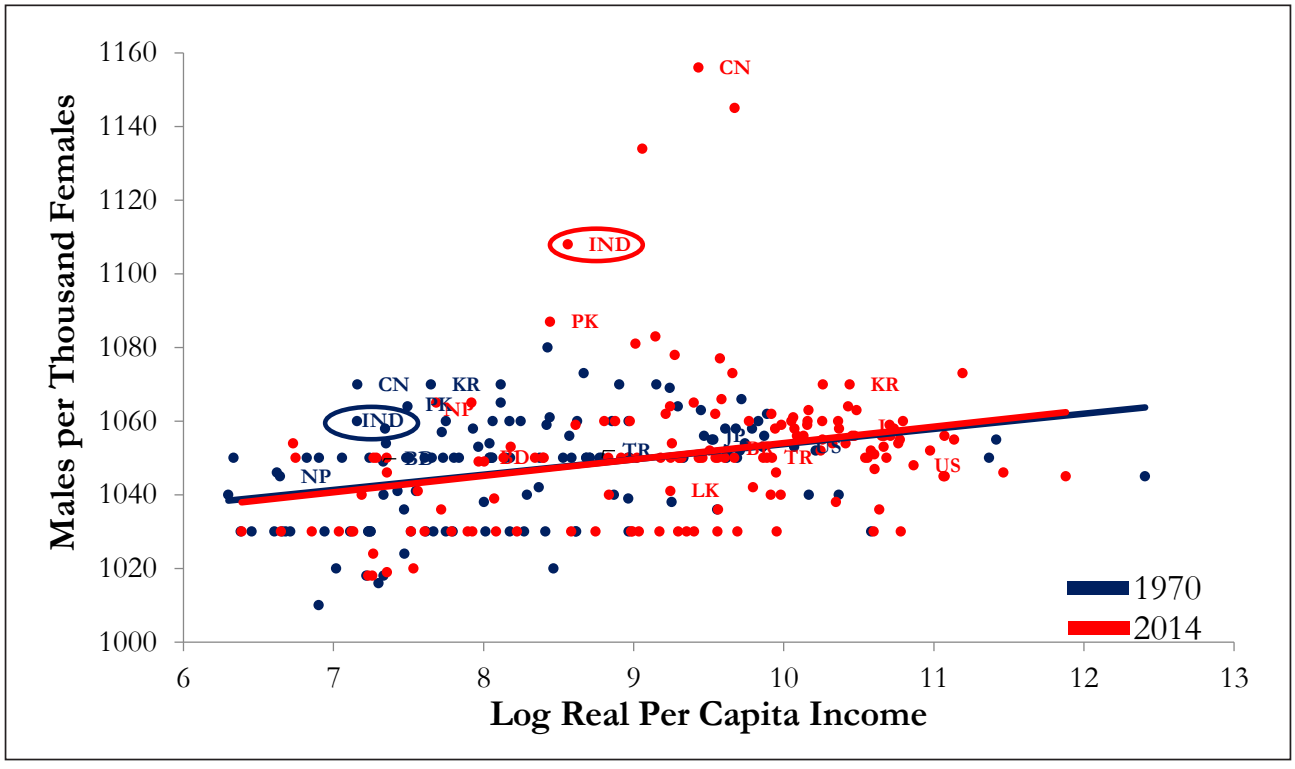

स्रोत: विश्व विकास संकेतक और पेन्न वर्ल्ड टेबल्स

जो 1970 में 1070 से बढ़कर 2014 में 1156 हो गया। इस अवधि के दौरान, भारत का लिंगानुपात भी बिना एक संतान नीति के महत्वपूर्ण रूप से 1060 से 1108 हो गया है जबकि यदि विकास ने किसी उपाय की भांति कार्य किया होता, जो इससे लैंगिक अनुपात में सुधार होना चाहिए था।

7.33 चित्र 6 भारत के विभिन्न राज्यों में 1991 और 2011 में लिंगानुपात दर्शाता है। यह ध्यानाकर्षक है कि लिंगानुपात में सामान्य ऊर्ध्वमुखी गति है और प्रतीपगमन रेखा ऊर्ध्वमुखी रूप से तिरछी है जो आय एवं लिंगानुपात के बीच नकारात्मक सहसंबंध का सूचक है (विकास काल में बदतर होता हुआ) पंजाब और हरियाणा का निष्पादन सर्वाधिक मर्मस्पर्शी है जहां लिंगानुपात (0-6 वर्ष में) प्रति 1000 स्त्रियों पर 1200 पुरूष तक पहुंच रहा है भले ही ये दोनों राज्य समृद्धतम राज्यों में से हैं।

7.34 अनेक दशक पूर्व, सेन (1990) ने, लड़कों की तुलना में लड़कियों के विषम अनुपात पर ध्यान देते हुए, यह अनुमान लगाया था कि विश्व में लगभग 100 मिलियन महिलाएं गुमशुदा हैं (केवल भारत में तकरीबन 40 मिलियन)। इसका मुख्य कारण चुनिंदा गर्भपात के साथ-साथ जन्मोत्तर कन्या संतान की उपेक्षा है।

7.35 सेन (1990) और एंडरसन एवं रे (2010, 2012) द्वारा अंगीकृत प्रणाली का उपयोग करते हुए, भारत में "गुमशुदा" महिलाओं का कुल स्टॉक तथा प्रवाह अद्यतन है। गुमशुदा महिलाओं की संख्या 2014 में लगभग 63 मिलियन है तथा 2 मिलियन से अधिक महिलाएं विभिन्न आयु समूहों में प्रति वर्ष गुमशुदा हो जाती हैं (लिंग आधारित गर्भपात, रोग, उपेक्षा या अपर्याप्त पोषण के कारण)।

पुत्र "अत्यधिक" चाह: अंतिम संतान और "अवांछित" लड़कियों का लिंगानुपात

7.36 यद्यपि भ्रूण गर्भपात के जरिए सक्रिय लिंग वरीयता व्यापक रूप से प्रचलन में है, तथापि पुत्र की चाह सूक्ष्मतर रूप में भी प्रकट हो सकती है। माता-पिता पुत्रों की वांछित संख्या प्राप्त होने तक संतान उत्पत्ति जारी रखना पसंद कर

[8] विकास की दृष्टि से नर बच्चों में नवजात काल में जीवित बचे रहने की संभावना मामूली रूप से कमतर होती है, और इसीलिए उनका जन्म मामूली उच्चतर दर पर होता है। कुल मिलाकर, इससे यह सुनिश्चित होता है कि फिशर के सिद्धान्तानुसार, वयस्क अवधि में लिंगानुपात 1:1 है।

चित्र 6: भारतीय राज्यों का लिंगानुपात (0-6 वर्ष) और वास्तविक आय

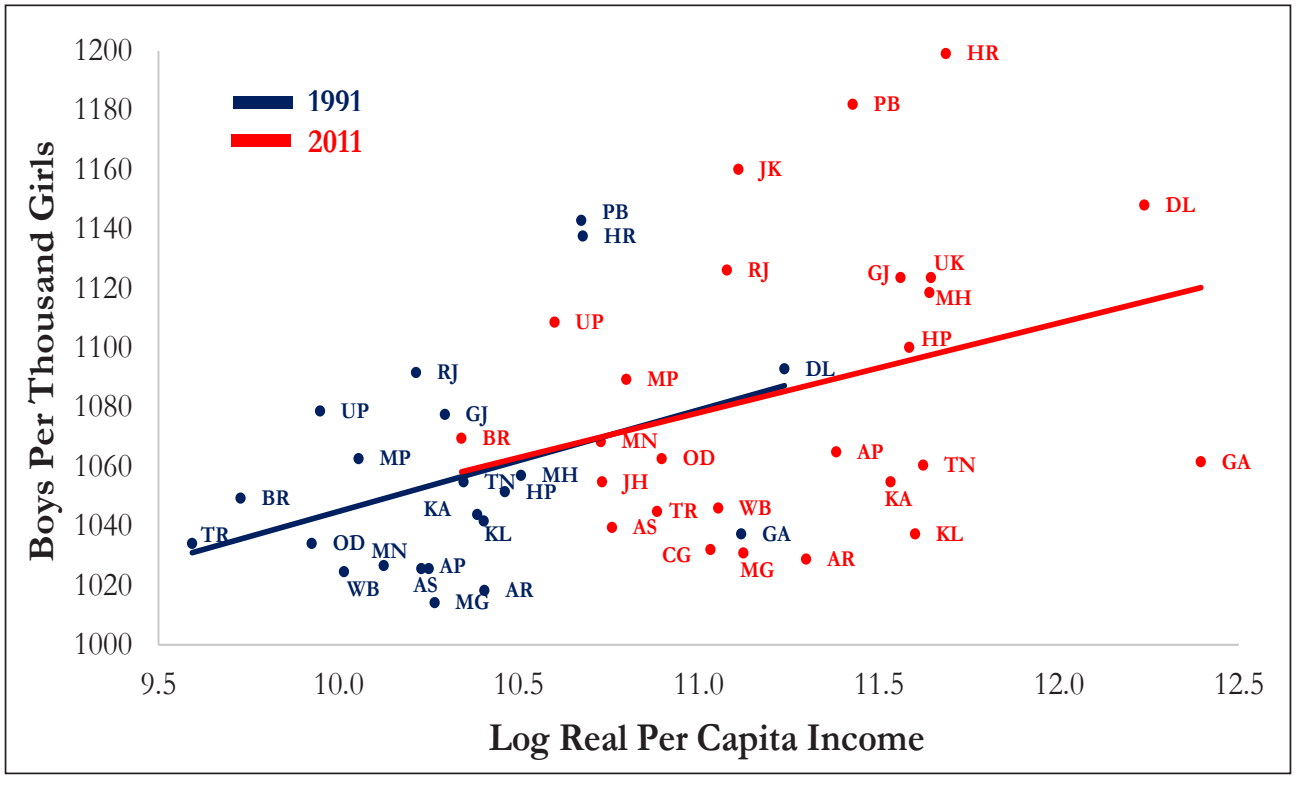

स्रोत: भारत की जनगणना और भारतीय रिजर्व बैंक

सकते हैं। यह पुत्र ''की अत्यधिक'' चाह कहलाती है। पुत्र ''अत्यधिक'' चाह-भले ही यह लिंग-आधारित गर्भपात में परिणामी नहीं होता-फिर भी यह महिला संतान के मामले में निर्णायक हो सकता है क्योंकि यह उनके लिए अपेक्षाकृत कम संसाधनों की उपलब्धता में परिलक्षित हो सकता है। (जयाचंद्रन और पांडे, 2017) जो महत्वपूर्ण बात ध्यान देने की है, वह यह है कि मात्र इस प्रकार की लिंग वरीयता से जन्म के समय या समग्र रूप से लिंग अनुपात विषम नहीं होगा। अत: पुत्र की ''मेटा'' चाह का पता लगाने हेतु कोई दूसरा उपाय अपेक्षित है। एक ऐसा संकेतक, जो इस चाह का पता लगाने की संभावना रखता है, वह अंतिम संतान का लिंग अनुपात (एसआरएलसी) है। अंतिम संतान लिंग अनुपात में ही पुत्रों की चाह का रूझान लड़कों पक्ष में दिखाई देगा। दूसरी ओर, 1.05:1 के समीप एसआरएलसी का आशय यह होगा कि संतान पैदा करते रहने का माता-पिता का निर्णय बेटा या बेटी के रूप में पिछले जन्म से सहसंबंद्ध नहीं है। परिवार वांछित संख्या में पुत्रों की प्राप्ति होने तक संतान उत्पत्ति में लगे रहते हैं। इस प्रकार का प्रजनन विराम नियम विषम लैंगिक अनुपातों में परिणामी होगा परंतु इसकी दिशाएं भिन्न हो सकती हैं: अंतिम संतान लड़का होने पर, पुरुषों के पक्ष में, परंतु अंतिम संतान लड़का न होने पर, महिलाओं के पक्ष में, (भारत के संबंध में नीचे दो पैनल देखें)। जहां ऐसा प्रजनन विराम नियम नहीं है, वहां लैंगिक अनुपात 1.05 होगा और इस बात का कोई प्रभाव नहीं होगा कि संतान अंतिम है या नहीं।

7.37 भारत ने लिंग चयन [प्रसवपूर्व नैदानिक तकनीक (पीएनडीटी) अधिनियम, 1994 के कार्यान्वयन के जरिए] को कानूनी रूप से वर्जित करने के बाद, जन्म के समय अपने लिंग अनुपात में स्थिरता देखी, यद्यपि यह उच्च स्तर पर थी (अनुबंध II देखें)। तथापि, यह स्पष्ट नहीं है कि क्या यह सामाजिक तरजीहों में परिवर्तन से संभव हुआ या लिंग जांच प्रौद्योगिकी के सशक्त सरकारी विनियमन के कारण संभव हुआ। एसआरएलसी इसके मूल कारकों को समझने तथा उनका विश्लेषण करने में हमारी बेहतर मदद करता है। (यू और अन्य, 2016)

7.38 चित्र 7 में भारतीय राज्यों के लिए एसआरबी के मुकाबले एसआरएलसी को दर्शाया गया है। लंबवत और क्षैतिजिक बिन्दु रेखाएं पुत्र की चाह रहित ''आदर्श'' बैचमार्क को प्रस्तुत करती हैं। मेघालय की स्थिति आदर्श है। इसके

चित्र 7: लिंग चाह - ''विकृत'' और ''अत्यधिक'' (प्रति हजार महिलाओं के मुकाबले पुरुष)

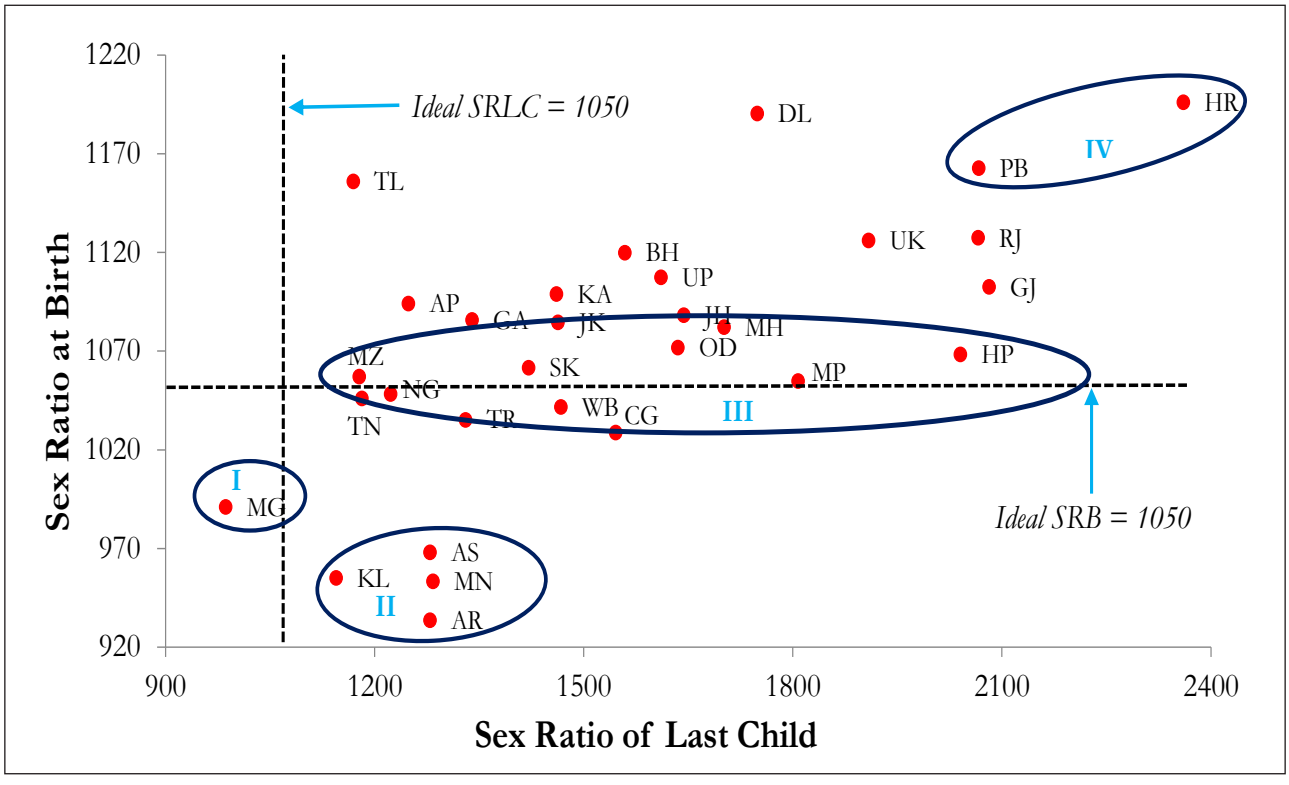

स्रोत: एनएफएचएस 4 आधारित सर्वेक्षण आकलन

जन्म के समय लिंग अनुपात और अंतिम संतान लिंग अनुपात दोनों बैंचमार्क के काफी निकट हैं, वृत्त II और वृत्त III में राज्यों, जैसेकि केरल में लिंग चयनित गर्भपातों की परंपरा दिखाई नहीं देती है (क्योंकि जन्म के समय उनके लिंग अनुपात जैविक बेंचमार्क के काफी निकट हैं) परंतु कुछ ''अत्यधिक'' पुत्र की चाह को इंगित करता (संकुचित एसआरएलसी)। दूसरी ओर, पंजाब और हरियाणा, पुत्र की अत्यंत प्रबल चाह को दर्शाते हैं - समग्र लिंग अनुपात जैविक बैंचमार्क से काफी ऊपर हैं, और अंतिम संतान के लिंग अनुपात में पुरूष की संख्या काफी अधिक है, जो यह दर्शाता है कि माता-पिता लड़की के होने पर पुत्र प्राप्ति की चाह का त्याग नहीं करते हैं।

7.39 ''अत्यधिक'' पुत्र चाह चित्र 8क और 8ख में दर्शायी गयी है। बायीं ओर के सभी पैनल ऐसे परिवारों में जन्म के समय लिंग अनुपात को दर्शाते हैं जिनमें स्टीक रूप से एक से अधिक संतान थी (अर्थात जो पहली संतान के जन्म के बाद संतान पैदा करते रहे)। इसलिए, भारत में (शीर्ष बायां पैनल), स्टीक रूप से 1 संतान से अधिक संतान पैदा करने वाले परिवारों में पहली संतान का लिंग अनुपात 1.07 है। इसी प्रकार, स्टीक रूप से 2 संतानों से अधिक संतान वाले परिवारों में दूसरी संतान का लिंग अनुपात 0.86 है।

7.40 इसके विपरीत, चित्र 8ख का शीर्ष पैनल जन्म के क्रम में अंतिम संतान का लिंग अनुपात दर्शाता है। भारत के लिए, पहली संतानों के मामले में अंतिम संतान लिंग अनुपात 1.82 है, जिसमें 1.05 के आदर्श लिंग अनुपात की तुलना में लड़कों की संख्या काफी अधिक है। स्टीक रूप से दो संतानों वाले परिवारों में दूसरी संतान के लिए यह अनुपात गिरकर 1.55 रह जाता है और आगे इसी प्रकार कम होता जाता है। दो पैनलों में चौंकाने वाला अंतर अत्यधिक पुत्र की चाह की भावना को सूचित करता है। जब इस अंतर की तुलना इंडोनेशिया (मध्य पैनल) के निष्पादन से की जाती है तब यह और आश्चर्यचकित करता है जहां इस तथ्य को महत्व दिए बिना कि संतान अंतिम है या नहीं और जन्म क्रम पर ध्यान दिए बिना एसआरएलसी आदर्श के निकट है।

7.41 ये चित्र क्या दर्शाते हैं? लड़की पैदा होने वाले परिवारों की तुलना में लड़का पैदा होने वाले परिवारों में आगे और संतान पैदा न करने की संभावना अधिक है। यह माता-पिता

चित्र 8क: जन्म से लिंग अनुपात
जब संतान अंतिम न हो

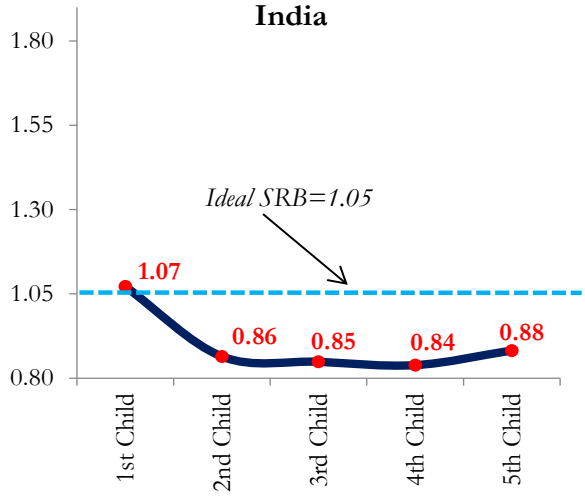

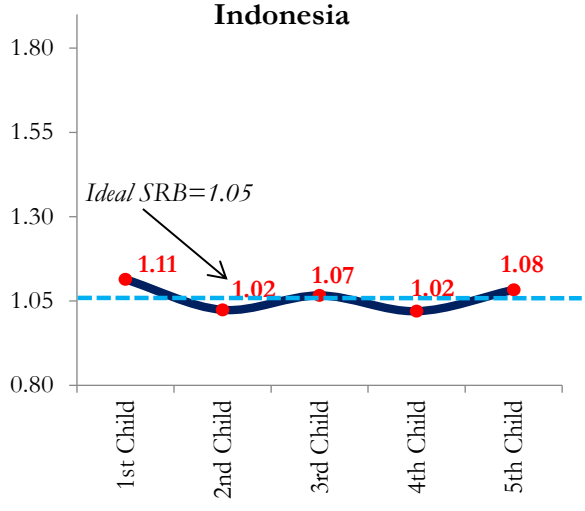

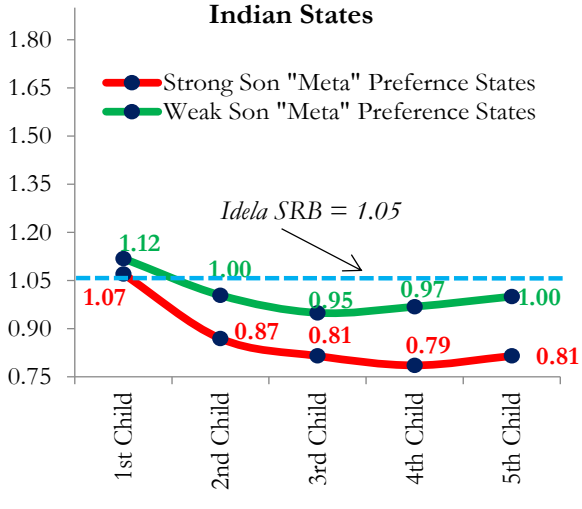

चित्र 8ख: जन्म से लिंग अनुपात
जब संतान अंतिम हो

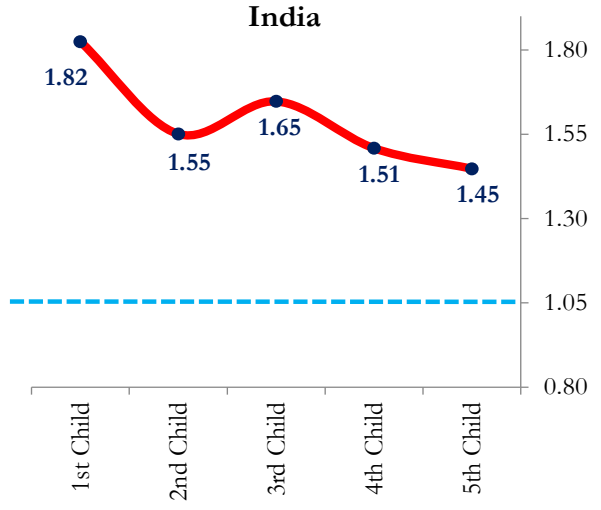

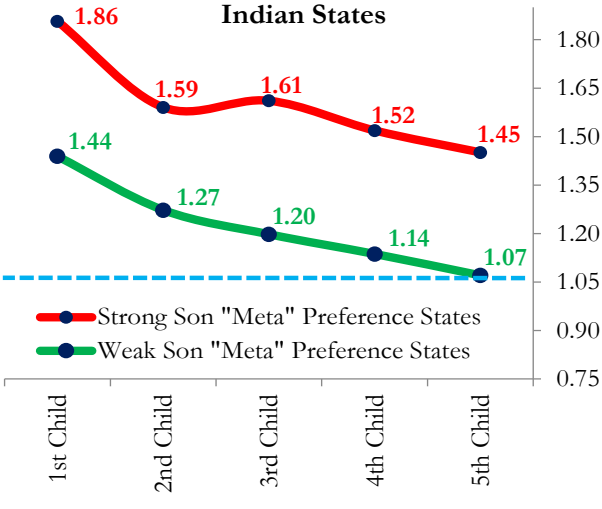

स्रोत: एनएफएचएस 4 आधारित सर्वेक्षण गणनाएं

द्वारा आगे और संतान पैदा न करने के लिए अपनाए जाने वाले ''विराम नियमों'' को सुझाता है - लड़का पैदा होने तक संतान पैदा करते रहो और उसके बाद विराम। इस पैटर्न का एक मात्र अपवाद पहली संतान के संदर्भ में है। ऐसे माता-पिता के मामलों में भी, जिनकी पहली संतान लड़का है, आगे और संतान पैदा करने की संभावना रहती है, जो एक विशुद्ध परिवार आकार तरजीह को प्रतिबिंबित करता - भारतीय माता-पिता औसतन कम-से-कम दो संतान चाहते हैं।

7.42 जयाचंद्रन (2015) में ऐसी पुत्र चाह से संबंधित कारणों की सूची दी गई है, जिनमें पतिस्थानिकता (विवाह के बाद महिला का पति के घर जाना), पितृवंशीयता (लड़कियों की बजाय लड़कों को संपत्ति का हस्तांतरण), दहेज (लड़की होने पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ के रूप में परिणति), लड़के बुढ़ापे का सहारा और लड़कों द्वारा किए जाने वाले अनुष्ठान/संस्कार शामिल हैं।

7.43 निचले पैनल भारतीय राज्यों से संबंधित हैं, ये पंजाब और हरियाणा जैसे प्रबल पुत्र चाह वाले राज्यों (लाल रेखा) और पूर्वोत्तर राज्यों (हरी रेखा) जैसे कम पुत्र प्रबल चाह दर्शाने वाले राज्यों के बीच अंतर प्रकट करते हैं। यहां भारतीय राज्यों के बीच में पुत्रों के लिए प्रबल पुत्र चाह में पुनः आश्चर्यजनक अंतर मौजूद है।

7.44 ऐसी प्रबल चाह ''अवांछित लड़कियों'' - ऐसी लड़कियां जिनके माता-पिता पुत्र चाहते थे परंतु उनके यहां पुत्री का जन्म हुआ, में वृद्धि करती है। यह अध्याय ऐसी अनुमानतः "आवांछित" लड़कियों का पहला अनुमान प्रस्तुत करता है। इसकी गणना संतान पैदा करना बंद न करने वाले परिवारों में बेंचमार्क लिंग अनुपात (बिंदु रेखा) और वास्तविक लिंग अनुपात के बीच अंतर के रूप में की जाती है (चित्र 8क के बाएं पैनल में; ब्यौरे के लिए अनुबंध III देखें)। इस तरीके से अवांछित महिलाओं की संख्या 21 मिलियन[9] बैठती है।

निष्कर्ष

7.45 जनसांख्यिकीय स्वास्थ्य सर्वेक्षण (डीएचएस) के बहु चरणों और राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) डाटा के विश्लेषण से पता चलता है कि पिछले 10-15 वर्षों में, महिलाओं की क्षमता, मनोवृत्ति और निष्कर्ष के 17 सूचकांकों में से 14 में सुधार हुआ है। उनमें से सात पर, इस प्रकार सुधार हुआ है कि विकास के स्तरों की गणना करने के बाद तुलनीय देशों की स्थिति के मुकाबले से भारत की स्थिति तुलनात्मक या कहीं ज्यादा बेहतर है।

7.46 अनेक आयामों, विशिष्ट रूप से रोजगार और प्रतिवर्ती गर्भनिरोधक के प्रयोग पर, भारत को अन्य देशों के समान होने के लिए कुछ सुधार करना पड़ेगा क्योंकि विकास स्वयं किसी उपाय के रूप में सिद्ध नहीं हुआ है।

7.47 उत्साहवर्धक ढ़ग से, लिंग निष्कर्ष समाभिरूपता पैटर्न दर्शाते हैं। इनमें समान स्थिति वाले देशों की तुलना में भारत में संपदा के साथ-साथ इतना सुधार हो रहा है कि पीछे रहने वाले क्षेत्र में भी, समय के साथ समान स्थिति में आने की आशा की जा सकती है।

7.48 भारत के भीतर अत्यधिक विजातीयता है, पूर्वोत्तर राज्य (बाकि देश के लिए आदर्श) अन्य राज्यों की तुलना में लगातार बेहतर निष्पादन कर रहे हैं और इसका कारण यह नहीं है कि वे अधिक संपन्न हैं; भीतरी राज्य पीछे छूट रहे हैं परंतु आश्चर्य की बात यह है कि दक्षिण भारत के कुछ राज्य उनके विकास स्तरों के अनुसार सुझाए गए स्तरों से काफी कम निष्पादन कर रहे हैं।

7.49 क्योंकि यह चुनौती सदियों से चली आ रही है, इसलिए कोई एक पक्ष इस समस्या के पैदा होने या इसका समाधान करने के लिए जिम्मेदार नहीं है। लैंगिकता के संदर्भ में, समग्र तौर पर समाज-सिविल सोसाइटी, समुदाय, परिवार-को (और न कि सिर्फ सरकार को) सामाजिक प्राथमिकताओं, यहां तक कि अधिक पुत्रों की चाह पर विचार करना चाहिए, जो विकास से अब अप्रभावित दिखाई देती है। महिलाओं और पुरुषों के प्रतिकूल लिंग अनुपात के कारण ''गुमशुदा'' महिलाओं की संख्या 63 मिलियन हो गई है। लेकिन अधिक पुत्रों की चाह प्रजनन-क्षमता रोकने के नियमों में भी प्रतिबिंबित हो सकती है जो पिछली संतान के लिंग पर आधारित है और जो संभवतः ''अवांछित'' कन्याओं को जन्म देती है, जिनकी संख्या लगभग 21 मिलियन आकलित की गई है। जाहिर है, यहां तक कि कनाडा में भी लिंग अनुपात में असमानता भारतीय मूल के परिवारों की विशेषता है (श्रीनिवासन, 2017)।

7.50 इन अवलोकनों को ध्यान में रखकर, देश और सभी हितधारकों को शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं

[9] यह वर्तमान जनसंख्या में 0-25 आयु वर्ग के लिए अवांछित महिलाओं की संख्या है।

के लिए उपलब्ध उत्तरोत्तर अवसरों में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को समझते हुए, सरकार ने *बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ* और *सुकन्या समृद्धि योजना* स्कीमें शुरू की हैं। सरकार ने सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में नियोजित महिलाओं के लिए 26 हफ्ते के मातृत्व अवकाश को भी अनिवार्य कर दिया हैं। इसके अलावा, 50 से अधिक कर्मचारियों वाले प्रत्येक कार्यालय में अब क्रेच की सुविधा प्रदान करना अनिवार्य है। इस संबंध में विकास की प्रबल ताकतों और सांस्कृतिक मानकों वाले अटल उद्देश्यों के बीच इस असमान प्रतिस्पर्धा में, पूर्व वाले के लिए इसे प्रदान की जा सकने वाली पूर्ण नीतिगत सहायता आवश्यक होगी और तत्पश्चात इसे किसी अन्य मदद की आवश्यकता होगी।

7.51 जिस प्रकार भारत व्यापार करने की सरलता संसूचकों की रैंक में ऊपर बढ़ने के प्रति प्रतिबद्ध है, कदाचित इसको लिंग संबंधी वांछित परिणामों को हासिल करने हेतु ठीक वैसी ही प्रतिबद्धता रखनी होगी। यहां, लक्ष्य व्यापक होना चाहिए। बहुत से लिंग संबंधी परिणाम गहन सामाजिक प्राथमिकताओं को जाहिर करते हैं, लड़कों को अत्यधिक तरजीह देने के फलस्वरूप, कई महिलाएं ''गुमशुदा'' हैं और लड़कियां ''अवांछित'' हो गईं। अत: समग्र रूप से भारतीय समाज को चाहिए कि एक संकल्प लिया जाए–अंत:करण निर्मल हो सके, इसके लिए समाज को अभी बहुत कुछ करना है–ताकि जल्द ही ये कुत्सित विचार इतिहास बन जाएं।

REFERENCES

Aguirre, D., et al. "Empowering the third billion: Women and the world of work in 2012." *Booz and Company* (2012).

Anderson, Siwan, and Debraj Ray. "Missing women: age and disease." *The Review of Economic Studies 77.4* (2010): 1262-1300.

Anderson, Siwan, and Debraj Ray. "The age distribution of missing women in India." *Economic and Political Weekly* (2012).

Beaman, Lori, et al. "Powerful women: does exposure reduce bias?." *The Quarterly Journal of Economics* 124.4 (2009): 1497-1540.

Bhalla, Surjit, and Ravinder Kaur. "Labour force participation of women in India: some facts, some queries." (2011).

Borchorst, Anette, and Birte Siim. "Woman-friendly policies and state feminism: Theorizing Scandinavian gender equality." Feminist Theory 9.2 (2008): 207-224.

Brar, Amanpreet, et al. "Sex Ratios at Birth Among Indian Immigrant Subgroups According to Time Spent in Canada." *Journal of Obstetrics and Gynaecology Canada* 39.6 (2017): 459-464.

"India should focus on women's inclusion in economy: IMF chief at WEF", Business Standard, 23 January, 2018.

Chand, R. and S. K. Srivastava. "Changes in the Rural Labour Market and Their Implications for Agriculture". *Economic and Political Weekly* 49(10) (2014): 47-54.

Chatterjee, Urmila and Murgai, Rinku and Rama, Martin, Job Opportunities Along the Rural-Urban Gradation and Female Labor Force Participation in India (September 15, 2015). World Bank Policy Research Working Paper No. 7412.

Das, Sonali and Jain-Chandra, Sonali and Kochhar, Kalpana and Kumar, Naresh, Women Workers in India: Why so Few Among so Many? (March 2015). IMF Working Paper No. 15/55.

Dollar, David, and Roberta Gatti. *Gender inequality, income, and growth: are good times good for women?*. Vol. 1. Washington, DC: Development Research Group, The World Bank, 1999.

Duflo, Esther. "Women empowerment and economic development." *Journal of Economic Literature* 50.4 (2012): 1051-1079.

Elborgh-Woytek, Katrin, et al. *Women, work, and the economy: Macroeconomic gains from gender equity*. International Monetary Fund, 2013.

Fisher, R.A. *The Genetical Theory of Natural Selection*, Clarendon Press, Oxford (1930)

Goldin, Claudia. *The U-shaped female labor force function in economic development and economic history*. No. w4707. National Bureau of Economic Research, 1994.

Guilmoto, Christophe Z. "The sex ratio transition in Asia." *Population and Development Review* 35.3 (2009): 519-549.

Jayachandran, Seema. "The roots of gender inequality in developing countries." *Economics* 7.1 (2015): 63-88.

Jayachandran, Seema, "Odds Are You're Measuring Son Preference Incorrectly." Impact Evaluations, World Bank blog, 2017.

Jayachandran, Seema, and Rohini Pande. "Why are Indian children so short? The role of birth order and son preference." *American Economic Review* 107.9 (2017): 2600-2629.

Kannan, K P and G Raveendran. "Counting and Profiling the Missing Labor Force". *Economic and Political Weekly.* 47(6) (2012): 77-80.

Kapsos, Steven, Andrea Silbermann, and Evangelia Bourmpoula. *Why is female labour force participation declining so sharply in India?*. ILO, 2014

Kevane, Michael, and David I. Levine. "The changing status of daughters in Indonesia." *Institute for Research on Labor and Employment* (2000).

Klasen, Stephan, and Janneke Pieters. "What explains the stagnation of female labor force participation in urban India?." *The World Bank Economic Review* 29.3 (2015): 449-478.

Lagarde C., "To Boost Growth: Employ More Women." *IMF Blog*. N. p., 2016. Web.

Lawson, Sandra. "Women hold up half the sky." Goldman Sachs Economic Research (2008).

Loko, Boileau, and Mame Astou Diouf. "Revisiting the Determinants of Productivity Growth: What's New?" (2009).

Mehrotra, Santosh, and Jajati K. Parida. "Why is the Labour Force Participation of Women Declining in India?." *World Development* (2017).

Miller, Grant. "Women's suffrage, political responsiveness, and child survival in American history." The Quarterly Journal of Economics 123.3 (2008): 1287-1327.

Pande, R., J. Johnson and E. Dodge. "How to Get India's Women Working? First, Let them out of the House." *IndiaSpend,* 9 April, (2016).

Prillaman, S. A., R. Pande, V. Singh, and C. T. Moore. "What Constrains Young Women's Labor Force Participation? Evidence from a Survey of Vocational Trainees." (2017) J-PAL.

Ray, Joel G., David A. Henry, and Marcelo L. Urquia. "Sex ratios among Canadian liveborn infants of mothers from different countries." *Canadian Medical Association Journal*(2012): cmaj-120165.

Sen, Amartya. "More Than 100 Million Women Are Missing." *The New York Review of Books*, www.nybooks.com/articles/1990/12/20/more-than-100-million-women-are-missing/.(1990)

Srinivasan, Sharada. "Transnationally Relocated? Sex Selection Among Punjabis in Canada." (2017).

Urquia, Marcelo L., et al. "Sex ratios at birth after induced abortion." *Canadian Medical Association Journal* (2016): cmaj-151074.

Yoo, Sam Hyun, Sarah R. Hayford, and Victor Agadjanian. "Old habits die hard? Lingering son preference in an era of normalizing sex ratios at birth in South Korea." *Population Research and Policy Review* 36.1 (2017): 25-54.